हरीकेन रीटा के साए में

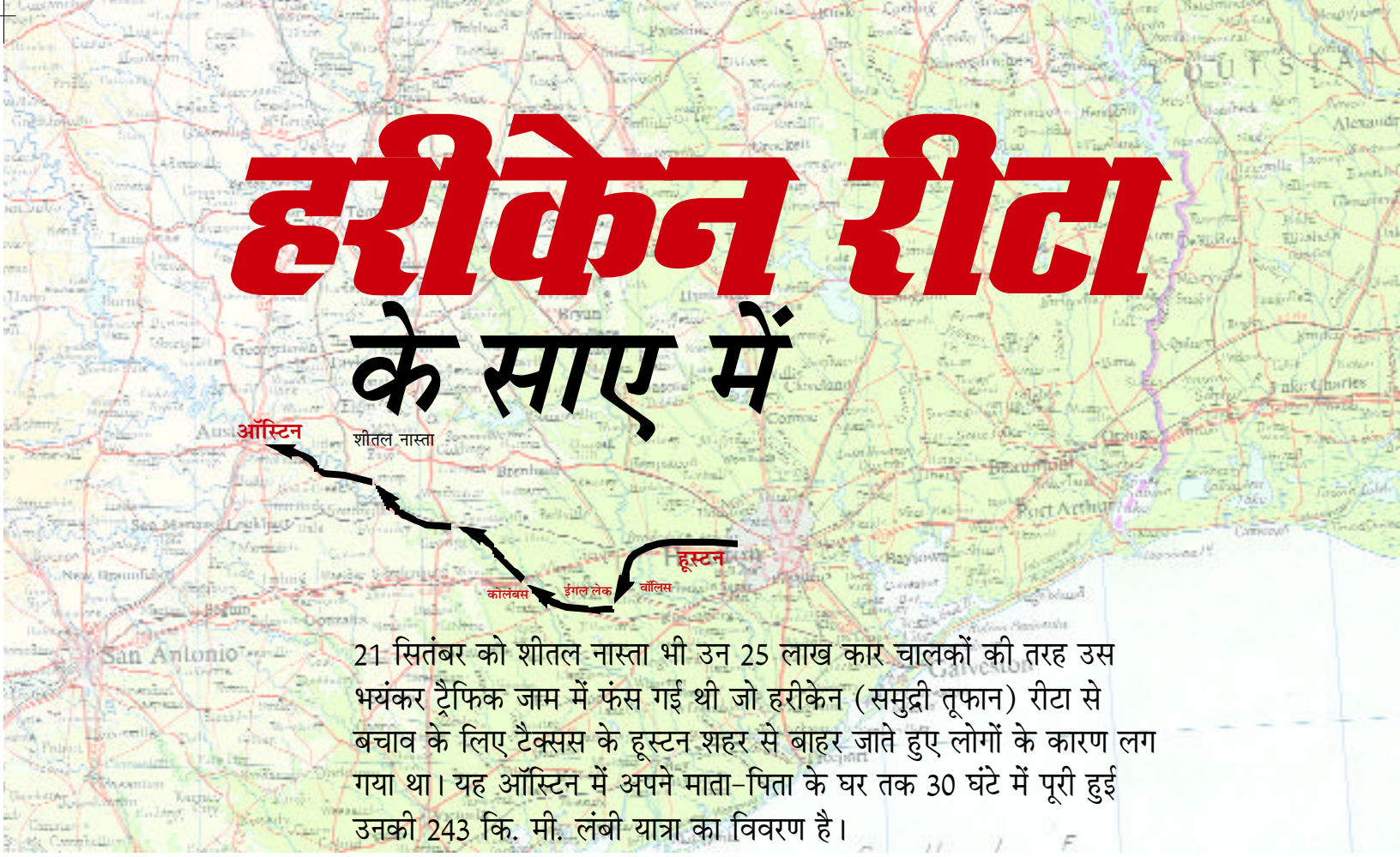

21 सितंबर को शीतल नास्ता भी उन 25 लाख कार चालकों की तरह उस भयंकर ट्रैफिक जाम में फंस गई थी जो हरीकेन (समुद्री तूफान) रीटा से बचाव के लिए टैक्सस के हूस्टन शहर से बाहर जाते हुए लोगों के कारण लग गया था। यह ऑस्टिन में अपने माता-पिता के घर तक 30 घंटे में पूरी हुई उनकी 243 कि. मी. लंबी यात्रा का विवरण है।

19 सितंबर

छः दिन बाद टैक्सस के तट पर विनाशकारी उष्णकटिबंधी हरीकेन रीटा के आ धमकने का अनुमान है। हूस्टन ऊर्जा उद्योग का केंद्र है और उसके निवासी राष्ट्रीय हरीकेन केन्द्र की वेबसाइट पर आंखें गड़ाए सावधानियों और अनुमानों का पता कर रहे हैं। न्यू आर्लिएंस में हरीकेन कैटरीना की विनाशलीला देख लेने के बाद हम तय नहीं कर पा रहे हैं कि रुकें या जाएं और जाएं तो कब? हमारी ओर बढ़ते हरीकेन की विनाशकारी ताकत श्रेणी 5 की हो सकती है। मतलब 250 किलोमीटर प्रति घंटे की चाल से आगे बढ़ता तूफान जो अपनी राह में पड़ती हर चीज को चकनाचूर कर देगा।

मेरे कई सहयोगी न्यूयार्क या वाशिंगटन स्थित हमारी कंपनी के दूसरे कार्यालयों में जाने के लिए उड़ान भरेंगे। लेकिन मैं ऑस्टिन में रह कर काम करना चाहती हूं। वहां तक ड्राइव करने में अमूमन तीन घंटे का समय लगता है और मैं अपने परिवार के साथ रह सकती हूं। बुधवार की शाम को जाने की योजना बनाती हूं ताकि बाद में ट्रैफिक बढ़ने से पहले ही निकल लूं। बॉस ने याद दिलाया, अपनी कार का गैस टैंक पूरा भरा लूं।

20 सितंबर

ज्यादातर लोग अब तय कर चुके हैं कि क्या करना है। खिड़कियों पर बोर्ड ठोकने हैं और उन्हें निकालना है। दोपहर बाद रीटा का श्रेणी 2 शक्ति हरीकेन बन चुका है। आंधी की रफ्तार 160 किलोमीटर प्रति घंटा है।

शाम तक समाचार चैनल खबर दे रहे हैं कि मेयर ने लोगों से स्वयं शहर खाली कर देने को कहा है। अगले दिन से तटीय क्षेत्रों में यह आदेश लागू हो जाएगा। हार्डवेयर और घरेलू सामान की दूकानों में से बैटरी, टार्च और खिड़कियों को मजबूती से बंद करने के काम आने वाले बोर्ड खत्म हो चुके हैं। किराने की दूकानों में पानी की बोतलें ही नहीं खाद्य पदार्थ भी समाप्त होते जा रहे हैं। दूर पश्चिम में ऑस्टिन तक में गैसोलिन की लाइनें लग रही हैं। जिन्होंने पहले से होटल का कमरा या एयरलाइन का टिकट बुक नहीं कराया है वे बड़े झंझट में पड़ेंगे।

21 सितंबर

कार्यालय में प्रबंधन की प्रात:कालीन बैठक में शहर खाली करने के आदेश को लागू कर दिया गया है। रीटा श्रेणी 5 की शक्ति का हरीकेन बन चुका है और हमारी ही ओर चला आ रहा है। मैं अपनी डेस्क का सामान समेटती हूं। डेस्क खिड़की के पास है, 38 वीं मंजिल पर। मैंने सुना है तेज तूफान आने पर खिड़कियां बाहर निकल जाती हैं और कागज खिंच कर हूस्टन के धुंधले आसमान में उड़ने लगते हैं।

घर पर भी मैं स्थानीय टेलीविजन केन्द्रों की सूचनाओं पर आंखें गड़ाए निकलने की तैयारी करती हूं जो लगता है लगातार ऑटो-रिपीट पर सूचनाएं दे रहे हैं: तूफान की स्थिति। खाली होते शहर का नक्शा। ट्रैफिक की नवीनतम स्थिति। रिपीट। वे शहर खाली करते लोगों से सामान समेटने की चिंता छोड़ कर अपनी सुरक्षा पर ध्यान देने का अनुरोध कर रहे थे। मैंने सोचा, ''यह भी क्या कहने की बात है?'' लेकिन, फिर अपनी ही भावनात्मक उधेड़बुन और तनाव को देख कर मुझे ताज्जुब होता है। आमतौर पर जब मैं सप्ताहांत पर ऑस्टिन जाती हूं तो थोड़े से कपड़े और प्रसाधन सामग्री बैग में ठूंस कर कार की पिछली सीट पर डाल देती हूं। लेकिन इस बार की बात अलग है। अपार्टमेंट की हर चीज सामने है और उसके बारे में निर्णय लेना है। कई चीजें ऐसी हैं जिन्हें मैं ले नहीं जा सकती, वे बड़ी हैं। कई छोटी-छोटी चीजें हैं लेकिन उन्हें रखने का समय नहीं है। इसलिए बस अपने आमतौर पर पहनने वाले कपड़े, जूते, लांड्री, लैपटॉप, पेंटिंग, जरूरी कागजातों का फाइल-बॉक्स, गहने और पासपोर्ट रख लेती हूं। बाकी जिन चीजों को मैं उठा सकती हूं उन्हें पलंग के ऊपर रख देती हूं।

RON HEFLIN © AP-WWP

हूस्टन के पास हाइवे 290 के किनारे खड़े तूफान के कारण घर छोड़कर निकले लोग। 22 सितंबर को हरीकेन रीटा से बचकर भागते लोगों के वाहनों की भरमार से हाइवे एक विशाल पार्किंग स्थल जैसा दिख रहा था।

10:34 बजे रात्रि

बहुत देर हो चुकी। हाइवे पर पहंचती हूं मगर दूर क्षितिज तक फैली कारों की टेल-लाइटें तुरंत रूकने को मजबूर कर देती हैं। घर पर फोन करके बताती हूं कि मैं चल चुकी हूं। सामान्यत: इससे उन्हें मेरे पहुंचने के समय का अंदाजा हो जाता है। लेकिन आज मैं उन्हें बताती हूं ''कुछ कह नहीं सकती कितनी देर में वहां पहुंचूंगी। सारी रात भी लग सकती है।'' पिता जी पूछते हैं एक महिला के रात में अकेले कार ड्राइव करने में क्या अक्लमंदी है? लेकिन यह इस तरह का सोचने का मौका नहीं है। मैं आज रात नहीं निकली तो हो सकता है कि फिर कभी न निकल सकूं। उस हालत में मुझे रूक कर तूफान का सामना करना होगा। कल फिर यही कारों की टेल लाइटें होंगी, समय आगे खिसक चुका होगा और रीटा तूफान पास आ चुका होगा।

और फिर, मैं अकेली नहीं हूं। सैकड़ों-हजारों हूस्टन-निवासी हाइवे पर मेरे साथ हैं- एक मील प्रति घंटे की चाल से सरकते हुए। मैं अपने आसपास की कारों को पहचानने लगी और इस परिचय से मुझे थोड़ा सुकून मिलता है।

22 सितंबर 1.30 बजे प्रात:

हम आठ कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार से चल रहे हैं। इस तरह घर पहुंचने में 30 घंटे लगेंगे। 30 घंटे सड़क पर बिताने के लिए तैयार होकर तो मैं नहीं आई। मेरे पास इतना पानी और भोजन भी नहीं है। जानकारी पाने का मेरे पास रेडियो के अलावा दूसरा साधन सिर्फ सेलफोन है और मैं कार चार्जर भूल आई हूं। सबसे बड़ा डर तो यह है कि कहीं गैस न खत्म हो जाए। घुटन भरी गर्मी और नमी के बावजूद बाकी लोगों की तरह मैं भी एयर कंडीशनर बंद कर देती हूं, खिड़कियां खोल देती हूं।

3.30 बजे प्रात:

पांच घंटे हो चुके, और मैं जहां से चली थी वहां से ग्यारह कि.मी. से भी कम दूरी तय कर पाई हूं। हाइवे अपने-आप सामाजिक दृश्य का रूप लेने लगा है। शहर से जाते हुए तमाम लोग कारवां बना कर चल रहे हैं। जब वे बैचेन हो जाते हैं तो रिश्तेदारों व दोस्तों से बतियाने के लिए अपनी कारों से बाहर निकल आते हैं या आहार ठंडा रखने वाले कूलरोंवाली पेटियां खोल लेते हैं। बगल में एक ट्रक के चालक ने शायद बीयर का कैन खोल लिया है। दूसरे लोग ड्राइविंग सीट बदल रहे हैं या सुस्ताने के लिए शोल्डर लेन में जा रहे हैं। एक आदमी वैन का दरवाजा खोल कर मुझे देखकर सीटी बजाता है। इस समय भी इसे सही सूझ रहा है?

6.30 बजे प्रात:

आठ घंटे बाद, आसपास के इलाके को देख कर मैं समझ जाती हूं- आम दिनों में 112 से 128 किलोमीटर प्रति घंटे की चाल से यहां से घर की दूरी केवल 30 मिनट होती। इस जाम में हर इमारत, हर निशान कितना साफ दिखाई दे रहा है।

सुबह होने पर मुझे पता लगता है कि लोग क्या-क्या चीज बेहद जरूरी मान कर अपने साथ लाए हैं। एक दम्पत्ति की दूरदृष्टि देखिए, वे यू-हॉल मूविंग ट्रक लेकर चल रहे हैं। पिक-अप ट्रक फर्नीचर से लेकर 'पालतू' प्राणियों के पिंजरों, महंगे खिलौनों और बोतलबंद पानी के केसों से ठसाठस भरे हुए हैं। वैन और स्पोर्ट्स वाहनों की छतों पर सामान लादा गया है।

मेरी नजर पूरी रात मेरी बगल की लेन में साथ-साथ चल रही एक सपाट पुरानी स्पोर्ट्स कार पर पड़ती है। उसके रियरव्यू शीशे से एक पिंजरा लटक रहा है जिसमें दो-तीन चिड़ियां हैं। आगे की पैसेंजर सीट में दो छोटे बच्चे हैं और ड्राइवर-शायद उनकी मां है जो गोद में एक शिशु को पकड़ कर गाड़ी चला रही है। बाद में, पैसेंजर दरवाजा खुलता है और शायद पीछे की सीट पर आराम करने के बाद एक आदमी उठ कर मां का स्थान लेने आ जाता है।

ब्रैकफास्ट का समय हो गया है। जिन कारों में एक से अधिक यात्री बैठे हैं, उनमें से लोग निकल कर हाइवे डिवाडरों और अवरोधों को फांदते हुए खाद्य पदार्थों, पानी, गैसोलिन या शायद शौचालयों की खोज में हाइवे के किनारे बने सुविधा स्टोरों में जा रहे हैं। अगर भाग्य साथ दे रहा है तो स्टोर खुले मिल रहे हैं। खुले हैं तो देख रहे हैं कि शेल्फ पर खाने-पीने की चीजें और पानी तथा पंपों में गैस है या नहीं। एक रेडियो स्टेशन सूचित कर रहा है कि शहर खाली करके जाते हुए लोगों के मार्गों पर इन चीजों की कमी हो गई है।

मैं अपनी एक सहेली को फोन करती हूं कि तुरंत निकल पड़े अन्यथा तूफान के पहुंचने से पहले नहीं निकल पाएगी। वह तय ही नहीं कर पा रही है कि क्या करे। हूस्टन के निवासी अब या तो अनिश्चित काल तक हाइवे पर चलते रहें या फिर घर पर तूफान को झेलें। फिर, अगर उन्होंने अपनी कार का ईंधन टैंक नहीं भरवाया है तो भाग्य शायद उनका साथ नहीं दे पाएगा। मेरी सहेली घर में रहना तय करती है। मेरा भी मन वापस लौट जाने को हो रहा है। हाइवे पर मैं आधा दिन बिता चुकी हूं जबकि घर वापस लौटने में एक घंटे से भी कम समय लगेगा।

यह अनुभव इस खबर से और भी बेतुका लगने लगा कि कि रीटा शायद पूर्व में लुइसियाना की ओर निकल जाए और हम तक पहुंचे ही नहीं। फिलहाल रेडियो समाचार रिपोर्टर हमसे धैर्य रखने और आगे बढ़ते रहने का अनुरोध कर रहे हैं। सरकार की दृष्टि में हूस्टन अब भी खतरे में है।

PAUL SANCYA © AP-WWP

हरिकेन रीटा के आने से पहले शहर छोड़ने की तैयारी करते पासडेना, टैक्सस में एक स्टोर में कतार में खड़े सामान खरीदते लोग।

हाइवे पर विपरीत दिशा में हूस्टन तथा तट की ओर भागती गाड़ियों को देख कर हम पागल हुए जा रहे हैं क्योंकि इसी हाइवे पर हम घंटों बिता चुके हैं। देर सुबह विपरीत दिशा में ट्रैफिक चलाने की ''अभूतपूर्व'' घोषणा की जाती है। पूर्व की ओर जाने वाली लेनों में ट्रैफिक की दिशा मोड़ दी जाएगी ताकि पश्चिम की ओर जाने वाला ट्रैफिक छंट सके। यह राहत का पहला संकेत है। दुर्भाग्य से कंक्रीट के डिवाइडरों को हटा कर ट्रैफिक की दिशा बदलने के लिए आदमियों की मदद और अन्य साधन जुटाने में आशा से कहीं अधिक लंबा समय लग गया।

दोपहर

15 घंटे बाद भी मैं हूस्टन से 50 कि.मी. के दायरे में हूं। पानी और नाश्ते का सामान समाप्त हो चुका है। मुझे भूख लगी है, नींद आ रही है और मैं थक चुकी हूं। सूरज हमें तपा रहा है। रेडियो सूचित कर रहा है कि यह गर्मियों का सबसे गर्म दिन है और तापमान 38 डिग्री सेल्सियस पहुंच चुका है। गैस बचाने के लिए लोग अब एयर कंडीशनर बंद करके कार को न्यूट्रल में डाल कर इंच-दर-इंच धकिया रहे हैं। कई लोगों की गाड़ियों में गैस खत्म हो चुकी है या गड़बड़ी आ गई है। खिड़की से झुक कर देखती हूं, हाइवे डिवाइडर के एकदम पास, बांईं ओर की सबसे किनारे वाली लेन में पेशाब से आधा भरा पानी का जग दिखाई देता है।

पिट स्टॉप का भी अब कोई मतलब नहीं है। भीड़ और ट्रैफिक की गड़बड़ी को बढ़ने से रोकने के लिए निकासी के रास्ते बंद हो चुके हैं। हाइवे पर आगे या पीछे जाना मुश्किल हो गया है क्योंकि फीडर रास्तों पर भी वाहन ही वाहन हैं।

फिर भी, एक-दो घंटे बाद मुझे निकासी का रास्ता मिल जाता है। मैं झटपट किसी स्टोर या होटल की तलाश में उस पर निकल पड़ती हूं। आखिर एक स्टोर मिल जाता है। मेरे लिए वह जैसे नखलिस्तान है। लेकिन, बेहद धीमे तकलीफदेह ट्रैफिक में पार्किंग स्थल के प्रवेश तक पहुंचने के लिए इंतजार कर रही हूं।

मैं थोड़ी-थोड़ी देर में राहत पाने के लिए दो-एक मिनट अपना एयर कंडीशनर चला लेती हूं। किसी क्षण मेरी आंखें, आगे चल रही कार के भीतर पिछली खिड़की के पास रखे बोतलबंद पानी के केस पर टिक जाती हैं। मैं उस पर से अपनी आंखें हटा नहीं पा रही हूं। तभी न जाने कहां से बक्सा पकड़े एक आदमी कारों की लेन के बीच में चलता हुआ आता है और पानी की बोतलें थमाता है। मैं नहीं जानती वह कौन है और पानी क्यों दे रहा है लेकिन भिखारी की तरह मैं उससे पूछती हूं कि क्या वह एक बोतल पानी मुझे दे देगा?

2 बजे दोपहर बाद

स्टोर से मैं पानी और नाश्ते की चीजें कार में भर लेती हूं, फोन चार्ज करती हूं और लौट कर हाइवे पर आ जाती हूं। हाइवे के ट्रैफिक जाम की तरह ही सेलफोन के नेटवर्क भी जाम हैं, फिर भी किसी तरह अपने परिवार से मेरा संपर्क हो जाता है। सौभाग्य से मेरे एक सहकर्मी का फोन आ जाता है जो ऐन मौके पर मुझे एक दूसरा रास्ता पकड़ने की राय देता है। और जल्दी ही, घर से निकलने के 15 घंटे बाद मैं पहली बार अपनी कार के एक्सीलरेटर का उपयोग करती हूं।

11 बजे रात्रि

मैंने आधी दूरी पूरी कर ली है, आमतौर पर हूस्टन से यहां तक पहुंचने में मुझे 90 मिनट लगते हैं। और वह भी पूर्व की ओर जाने वाली लेन से आते हुए। मगर अब भी 13 से 15 घंटे की यात्रा बाकी है।

मेरे माता-पिता गैसोलिन और मुझे राहत दिलाने के लिए एक अतिरिक्त ड्राइवर लेकर ऑस्टिन से चल पड़े हैं। हमारे फोन कनैक्ट नहीं हो रहे हैं लेकिन मैंने अपने चचेरे भाई के जरिए यह संदेश भेज दिया है कि हम मैक्डोनाल्ड पर मिलेंगे। मुझे पता नहीं है कि वह है भी या नहीं और अगर है तो कहां है। लेकिन जब मैं वहां पहुंचती हूं तो उन्हें हाइवे के किनारे बेसब्री से इंतजार करते हुए पाती हूं। मेरी मां पास के ही एक होटल मालिक से परिचय कर लेती हैं क्योंकि वे दोनों गुजराती हैं। होटल पूरा भरा हुआ है लेकिन वे हमें ठहराने को तैयार हैं।

लेकिन हम चलने का निर्णय लेते हैं। एक और कार हमारे साथ हो लेती है। बाकी कई लोगों की तरह वे दो यात्री भी यहां फंसे हुए हैं। उनके पास थोड़ी-सी गैस बची है और खाने को कुछ नहीं है। स्थानीय स्टोर खाली हो चुके हैं। हम उन्हें पिताजी की लाई हुई आधी गैस देते हैं, आधी अपनी जरूरत के लिए बचा लेते हैं।

23 सितंबर, 4 बजे प्रातः

हूस्टन से मेरे निकलने के 30 घंटे बाद हम ऑस्टिन में मेरे माता-पिता के घर पहुंचे।

24 सितंबर

रीटा श्रेणी 3 की शक्ति के हरीकेन के रूप में टैक्सस-लुइसियाना सीमा के पास हूस्टन के उत्तर-पूर्व में पहुंच गया है। लेकिन शहर छोड़ कर गए लोगों को वापस लौटने से मना किया जा रहा है। गैस स्टेशनों में गैस का नया स्टॉक नहीं पहुंचा है। हूस्टन तक के पूरे रास्ते पर रेस्टोरेंट सब कुछ बेच कर बंद हो चुके हैं। हूस्टन के कई इलाकों में बिजली नहीं है। कई लोग अपने आश्रय स्थलों को छोड़ कर वापस लौटने की जल्दी में हैं ताकि तूफान से हुए नुकसान का पता लगा सकें। हर आदमी लौटने की इतनी हड़बड़ी में है कि हमें फिर दूसरे भयंकर ट्रैफिक जाम का डर लगने लगता है। इस बार मेयर ने हूस्टन के जिस इलाके में आप रहते हैं, उसके अनुसार वापसी की खास योजना बनाई है। मैंने ऑस्टिन से ही अपना काम किया और हफ्ते भर बाद हूस्टन लौटी।

लेखिका: *शीतल नास्ता लेखिका हैं और हूस्टन, टैक्सस में रहती हैं।*